



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... उमात उमात.....

दिनांक २५.१.२०२१.....पृष्ठ संख्या..... २..... कॉलम..... ६८.....

## उन्नत किस्मों पर दें जोर : डॉ. जीपी सिंह

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। कृषि वैज्ञानिक समय पर बिजाई की जाने वाली व अधिक उत्पादन देने वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर अधिक शोध कार्य करें ताकि किसानों की आमदनी में इजाफा हो सके और वे खुशहाल हो सकें। यह बात भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान करनाल के निदेशक डॉ. जीपी सिंह ने कही। वे बुधवार को विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के गेहूं व जौ अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र का दौरा करने के बाद वैज्ञानिकों से रुबरू हो रहे थे।

उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यूएच-1270 किस्म का अधिक से अधिक बीज तैयार करने का आह्वान किया ताकि किसानों को ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके। विश्वविद्यालय के



गेहूं एवं जौ अनुभाग का दौरा करते भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान करनाल के निदेशक डॉ. जीपी. सिंह व विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह। संग्रह

कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने भी वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे ऐसी तकनीकों एवं विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों को विकसित करने पर जोर दें, जिससे किसानों को कम खर्च में अधिक लाभ मिल सके। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ.

भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान करनाल के निदेशक ने किया दौरा

एसके सहरावत, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एके छाबड़ा, प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. सतीश खोखर सहित गेहूं व जौ अनुभाग के वैज्ञानिक मौजूद रहे।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	24.02.2021	--	--

### समय पर बिजाई वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर करें अधिक शोध : डॉ. जी.पी. सिंह

#### पाठकपक्ष न्यूज़

हिसार, 24 फाल्गुनी : कृषि वैज्ञानिक समय पर बिजाई की जाने वाली व अधिक उत्पादन देने वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर अधिक शोध कार्य करें ताकि किसानों की आमदनी में इजाफा हो सके और वे खुशहाल हो सकें। उक्त विचार भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक डॉ. जी.पी. सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के गेहूं व जौ अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र का दौरा करने के उपरांत वैज्ञानिकों से रूबरू हो रहे थे। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि उनके द्वारा विकसित गेहूं की आधुनिक व उन्नत किस्मों की देशभर में मांग रहती है, जिसकी बढ़ालत देश के खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का अहम योगदान है। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यूएच-1270 के लिए वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा कि इस किस्म की औसतन पैदावार 75.85 किलोटन प्रति हेक्टेयर आंकी गई है जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसलिए इस किस्म का अधिक से अधिक बीज तैयार करें और इसका प्रचार व प्रसार करते हुए किसानों को उपलब्ध करवाएं ताकि किसानों को ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने भी वैज्ञानिकों से आवान करते हुए कहा कि वे ऐसी तकनीकों एवं विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों को विकसित करने पर जोर दें जिससे किसानों को कम खर्च में अधिक लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि यहां से विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों को कृषि विज्ञान केंद्रों



व अन्य माध्यमों से ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने की कोशिश करें। किसानों को भी अपने स्तर पर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से मिलकर अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए। उन्होंने किसानों से आवान किया कि वे अपनी फसलों पर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा सिफारिश किए गए कीटनाशकों का ही उनकी सलाहनुसार प्रयोग करें ताकि समय रहते फसलों पर आने वाली बिमारियों की रोकथाम की जा सके और फसलों से अधिकतम पैदावार हासिल की जा सके। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने विश्वविद्यालय में चल रहे विभिन्न अनुसंधान कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यहां के वैज्ञानिक अपनी अथक मेहनत व लगन से निरंतर विश्वविद्यालय की गरिमा को चार-चांद लगा रहे हैं, जिसकी बढ़ालत राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालय की अलग पहचान है। यहां से विकसित उन्नत किस्मों की न केवल हरियाणा बल्कि अन्य राज्यों में भी बहुत अधिक मांग बढ़ रही है। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. ए.के. छाबड़ा, प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. सतीश खोखर सहित गेहूं व जौ अनुभाग के वैज्ञानिक मौजूद रहे।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	25.02.2021	--	--

# सनय पर बिजाई वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर कर्दे अधिक थोथ : जीपी सिंह

हिसार, राज पराशार (पंजाब केसरी) : कृषि वैज्ञानिक समय पर बिजाई की जाने वाली व अधिक उत्पादन देने वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर अधिक शोध कार्य करें ताकि किसानों की आमदनी में इजाफा हो सके और वे खुशहाल हो सकें। उक्त विचार भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक डा. जीपी सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के गेहूं व जौ अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र का दौरा करने के उपरांत वैज्ञानिकों से रुबरु हो रहे थे। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि उनके द्वारा विकसित गेहूं की आधुनिक व उन्नत किस्मों की देशभर

### ● भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक ने किया दौरा, वैज्ञानिकों से किया आह्वान

में मांग रहती है, जिसकी बदाँलत देश के खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का अहम योगदान है। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यूएच-1270 के लिए वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा कि इस किस्म की औसतन पैदावार 75.85 विवंटल प्रति हेक्टेयर आंकी गई है जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है।

इसलिए इस किस्म का अधिक से अधिक बीज तैयार करें और इसका प्रचार व प्रसार करते हुए किसानों को उपलब्ध कराएं ताकि किसानों को ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने भी वैज्ञानिकों से आह्वान करते हुए कहा कि वे ऐसी तकनीकों एवं विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों को विकसित करने पर जोर दें जिससे किसानों को कम खर्च में अधिक लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि यहां से विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों को कृषि विज्ञान केंद्रों व अन्य माध्यमों से ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने की कोशिश करें।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जगमार्ग	24.02.2021	--	--

### समय पर बिजाई वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर करें अधिक शोधः डॉ. जीपी सिंह

➡ भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक ने किया दौरा

#### जगमार्ग न्यूज़

हिसार। कृषि वैज्ञानिक समय पर बिजाई की जाने वाली व अधिक उत्पादन देने वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर अधिक शोध कार्य करें ताकि किसानों की आमदारी में इजाफा हो सके और वे खुशहाल हो सकें।

यह बात भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक डॉ. जीपी सिंह ने कही। वे हरियाणा कृषि विवि. के कृषि महाविद्यालय के गेहूं व जौ अनुभाग के अनुसंधान थेट्र का दौरा करने के



उपरान्त वैज्ञानिकों में रुबरू हो रहे थे। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को स्पाहना करते हुए कहा कि उनके द्वारा विकसित गेहूं की आमुनिक व उन्नत किस्मों की देशभर में मांग रहती है, जिसकी व्यावैत देश के खाद्यान धन्डारण में प्रदेश का अहम योगदान है। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित गेहूं की उन्नत किस्म डल्लूपथ-1270 के लिए वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा कि इस किस्म की औसतन पैदावार 75.85 किलोट्रॉन प्रति हेक्टेयर आंकी गई है जो अपने आप में बहुत

बड़ी उपलब्धि है। इसलिए इस किस्म का अधिक से अधिक बीज तैयार करें और इसका प्रचार व प्रसार करते हुए किसानों को उपलब्ध करवाएं ताकि किसानों को ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने भी वैज्ञानिकों से आल्वान किया कि वे ऐसी तकनीकों एवं विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों को विकसित करने पर जोर दें जिससे किसानों को कम खर्च में अधिक लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि यहां से विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों को कृषि विज्ञान केंद्रों व अन्य माध्यमों से ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने की कोशिश करें।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज़	24.02.2021	--	--

भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक ने किया दौरा, वैज्ञानिकों से किया आह्वान

### समय पर बिजाई वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर करें अधिक शोध : डॉ. सिंह

#### पांच बजे न्यूज़

हिसार। कृषि वैज्ञानिक समग्र पर विजाई जौ जाने वाली व अधिक उत्पादन देने वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर अधिक शोध करें ताकि किसानों की आमददों में इजाफा हो सके और वे खुशील हो सकें। उक्त विचार भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक डॉ. जी.पी. सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के गेहूं व जौ अनुभाग के अनुसंधान थेट्र का दौरा करने के उपरान्त वैज्ञानिकों से खबर हो रहे थे। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को समाजना करते हुए कहा कि उनके द्वारा विकसित गेहूं जौ की अधिकतम व उत्तम किस्मों की देखभाल में ध्यान रहता है, जिसकी बढ़ीतता देश के खाद्यान्न भण्डार में प्रतीक का अत्यन्त योगदान है। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित गेहूं जौ की उन्नत किस्म डब्ल्यूएच-1270 के लिए वैज्ञानिकों को बधाई दी हुई कहा कि इस किस्म की अोरतन वैद्यकी 75.85 विवेत्ता प्रति हेक्टेएर ऑफी गई है



जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसलिए इस किस्म का अधिक से अधिक बीज तैयार करें और इसका प्रचार व प्रसार करते हुए किसानों को उपलब्ध करवाएं

ताकि किसानों को ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके। विश्वविद्यालय के कुलपति औफिसर समर सिंह ने भी वैज्ञानिकों से अपनी फसलों पर विश्वविद्यालय के आव्वन करते हुए कहा कि वे ऐसी

कठिनीकों एवं विभिन्न फसलों की उत्तम विकास की विकासित किस्मों की जा सके और फसलों से अधिकतम बेदावा हासिल की जा सके।

यहां से विकसित उत्त किस्मों की अन्य राज्यों में भी बढ़ रही मार्ग

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहायत ने विश्वविद्यालय में चाहे हो विभिन्न अनुसंधान कार्यों का वा में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यहां के वैज्ञानिक अपनी अतिक महान व लाभ में निरन्तर विश्वविद्यालय की गाँथा को चार-चांद लाग रहे हैं, जिसकी बढ़ीतता राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालय की अत्यन्त पहचान है। यहां से विकसित उत्त किस्मों की न न केवल हीयाणा बल्कि अन्य राज्यों में भी बढ़त अधिक मात्रा बढ़ रही है। इस अवसर पर जूपी महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. ए.के. छावड़ा, प्रोफेसर डॉ. समरकर डॉ. सतीश खालीर सहित गेहूं व जौ अनुभाग के वैज्ञानिक मैंजूद रहे।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	24.02.2021	--	--

### समय पर बिजाई वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर करें अधिक शोध : डॉ. जीपी सिंह

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। कृषि वैज्ञानिक समय पर बिजाई को जाने वाली व अधिक उन्नतान देने वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर अधिक शोध करें ताकि किसानों की आमदानी में इजाफा हो सके। और वे खुशहाल हो सकें। उक्त विचार भारतीय गृह एवं जी अनुभाग संस्थान, करनाल के निदेशक डॉ. जी. पी. सिंह ने कहे। वे कृषि महाविद्यालय के गृह व जी अनुभाग के अनुभाग शेर का दीरा करने के डारों वैज्ञानिकों से रुक़्र हो रहे थे। उन्होंने विवरविद्यालय के वैज्ञानिकों की सहाना करते हुए कहा कि उनके द्वारा विकसित गृह की आधिक व उन्नत किस्मों को देशभर में पाया रहता है, जिसको बढ़ाव देने के खाद्यन भण्डारण में प्रदेश का अद्य योगदान है।



हिसार। गृह एवं जी अनुभाग का दीरा करते कूलपति प्रो. समर सिंह व निदेशक डॉ. जी.पी. सिंह।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	24.02.2021	--	--

### उन्नत किस्मों को विकसित करने पर अधिक शोध कार्य करें वैज्ञानिक : सिंह

हिसार/24 फरवरी/रिपोर्टर

कृषि वैज्ञानिक समय पर बिजाई की जाने वाली व अधिक उत्पादन देने वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर अधिक शोध कार्य करें ताकि किसानों की आमदनी में इजाफा हो सके और वे खुशहाल हो सकें। उक्त विचार भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक डॉ. जीपी सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के गेहूं व जौ अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र का दौरा करने के उपरांत वैज्ञानिकों से रूबरू हो रहे थे। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि उनके द्वारा विकसित गेहूं की आधुनिक व उन्नत किस्मों की देशभर में मांग रहती है, जिसकी बढ़ावत देश के खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का अहम योगदान है। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यूएच-1270 के लिए वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा कि इस किस्म की औसतन पैदावार 75-85 किंवंटल प्रति हैक्टेयर आंकी गई है जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसलिए इस किस्म का अधिक से अधिक बीज तैयार करें और इसका प्रचार व प्रसार करते हुए किसानों को उपलब्ध करवाएं ताकि किसानों को ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने भी वैज्ञानिकों से आह्वान करते हुए कहा कि वे ऐसी तकनीकों एवं विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों को विकसित करने पर जोर दें जिससे किसानों को कम खर्च में अधिक लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि यहां से विकसित विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों व तकनीकों को कृषि विज्ञान केंद्रों व अन्य माध्यमों से ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने की कोशिश करें। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि यहां यहां से विकसित उन्नत किस्मों की न केवल हरियाणा बल्कि अन्य राज्यों में भी बहुत अधिक मांग बढ़ रही है। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एके छाबड़ा, प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. सतीश खोखर आदि मौजूद रहे।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार न्यूज	24.02.2021	--	--

### समय पर बिजाई गाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर करें अधिक शोध : डॉ. जीपी सिंह

हिसार, 24 फरवरी (राजकुमार) : कृषि वैज्ञानिक समय पर बिजाई को जाने वाली व अधिक उत्पादन देने वाली उत्तर किस्मों को विकसित करने पर अधिक शोध कार्य करें ताकि किसानों की आमदानी में इजाफा हो सके और वे खुशहाल हो सकें। यह बता भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनसल के निदेशक डॉ. जीपी सिंह ने कही। वे हरियाणा कृषि विवि. के कृषि महाविद्यालय के गेहूं व जौ अनुभाग के अनुसंधान बोर्ड का दौरा करने के उपरांत वैज्ञानिकों से रुबरू हो रहे थे। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए कहा कि उनके द्वारा विकसित गेहूं की

आधुनिक व उत्तर किस्मों की देशभर में खाद्यान भूखण्ण में प्रदेश का अहम योगदान है। उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. लाल ही में विकसित गेहूं की उत्तर किस्म डल्लूरुच-1270 के लिए वैज्ञानिकों को

**मारतीव गेहूं गेहूं जौ अनुसंधान  
संस्थान, करनसल के निदेशक ने किया  
दौरा, वैज्ञानिकों से किया जाह्वान**

ताकि किसानों को ज्यादा से ज्यादा मांग रही है, जिसकी बढ़ीशत देश के लाभ मिल सके। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समय सिंह ने भी वैज्ञानिकों से आल्हान किया कि वे अपनी फसलों पर आल्हान किया कि वे अपनी फसलों पर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा सिफारिश किए गए कीटनाशकों का ही उनको सलाहनुसार प्रयोग करें ताकि समय रहते हुए फसलों पर आने वाली विमर्शों की रोकथाम की जा सके और फसलों से अधिकतम पैदावार हासिल की जा सके। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिकारियों एक छब्बी, प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. सतीश खोखर सहित गेहूं व जौ अनुभाग के वैज्ञानिक मौजूद रहे।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जीवन आधार	<b>24.02.2021</b>	<b>Online</b>	--

समय पर विजाहू वाली उन्नत किस्मों को विकसित करने पर करें  
अधिक शोध : डॉ. जीपी सिंह



**भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसाधान संस्थान करनाल के निदेशक ने किया दीर्घ वैज्ञानिकों से किया प्रश्न**



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... भैंनकु मस्कर

दिनांक २५. २. २१ पृष्ठ संख्या ५ कॉलम ७-८

खुम्ब उत्पादन तकनीक पर ऑनलाइन कार्यशाला का समापन

### कृषि अवशेषों का खुम्ब उत्पादन के लिए करें प्रयोगः डॉ. संदीप भाकर

भारत न्यूज़ | हिसार

किसान फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खुम्ब उत्पादन के लिए प्रयोग में ला सकते हैं। इससे पर्यावरण प्रदूषण कम होने के साथ-साथ किसानों की आय भी बढ़ेगी। यह कथन चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सहायक वैज्ञानिक डॉ. संदीप भाकर ने तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन पर व्यक्त किए।

उन्होंने बताया कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदानी बढ़ा सकते हैं। प्रशिक्षण में खुम्ब से संबंधित विभिन्न विषयों को अनेक वैज्ञानिकों द्वारा विस्तार से सांझा किया गया। प्रशिक्षण के सह-संयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि सफेद बटन खुम्ब, ढींगरी

खुम्ब व धान के पुअल की खुम्ब के लिए प्रदेश का मौसम अनुकूल है। उन्होंने बताया कि खुम्ब एक सतुर्वित आहार है जो पोषण व औषधीय गुणों से भरपूर है। खुम्ब में कैलोरी और वसा की मात्रा कम होने की वजह से यह वजन न सिर्फ घटाने में सहायक है, बल्कि इसमें प्रोटीन, विटामिन सी, विटामिन बी, विटामिन डी, कॉर्प, पोटाशियम, फास्फोरस, सेलेनियम, फाइओकेमिकल्स और एंटी ऑक्सीडेन्ट्स जैसे पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में होते हैं जो विभिन्न रोगों से बचाते हैं। इसके अलावा कई औषधीय गुण भी विद्यमान होते हैं। डॉ. मनमोहन ने खुम्ब में होने वाली मुख्य बिमारियों की रोकथाम के उपयोग बताए। डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने मशरूम में आने वाले मुख्य कीट, उनसे होने वाले नुकसान, लक्षणों व प्रबंधन के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज़	24.02.2021	--	--

### खुम्ब उत्पादन तकनीक पर ऑनलाइन कार्यशाला का समापन

## कृषि अवशेषों को जलाने की बजाय खुम्ब उत्पादन के लिए करें प्रयोग : डॉ. भाकर

### पांच बजे न्यूज़

हिसार। किसान फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खुम्ब उत्पादन के लिए प्रयोग में ला सकते हैं। इससे एक और जहां पर्यावरण प्रदूषित नहीं होगा वहीं किसानों की आय में भी बढ़ोतरी होगी। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सहायक वैज्ञानिक डॉ. संदीप भाकर ने बताया प्रशिक्षण के सह-संयोजक कहे। वे विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड़ा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया गया।

संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण)डॉ. अशोक गोदारा ने प्रशिक्षणार्थियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अंजित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इस प्रशिक्षण में खुम्ब से संबंधित विभिन्न विषयों को अनेक वैज्ञानिकों द्वारा विस्तार से साझा किया गया। प्रशिक्षण के सह-संयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि सफेद बटन खुम्ब, ढींगरी खुम्ब व धन के पुआल की खुम्ब के लिए हरियाणा प्रदेश का मौसम अनुकूल है। उन्होंने बताया कि खुम्ब एक संतुलित आहार है जो पोषण व औषधीय गुणों से भरपूर है। खुम्ब में कैलोरी और वसा की मात्रा कम होने की बजाय से यह न सिर्फ़ वजन को बढ़ने से रोकने और

वजन घटाने में सहायक है बल्कि इसमें प्रोटीन, विटामिन सी, विटामिन बी, विटामिन डी, कॉर्प, पोटाशियम, फास्फोरस, सेलेनियम, फाइओकेमिकल्स और एटी आक्सीडेन्ट्स जैसे पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं जो व्यक्ति को विभिन्न तरह के रोगों से दूर रखने में मदद करते हैं। इसके अलावा कई औषधीय गुण भी विद्यमान होते हैं। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी.के. शर्मा ने मशरूम के मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार करने की विधि पर प्रकाश डाला। पौध रोग विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राकेश चूध ने ढींगरी खुम्ब तथा कीड़ा, जड़ी खुम्ब को उगाने की विधि पर प्रकाश डाला। डॉ. मनमोहन ने खुम्ब में होने वाली मुख्य बिमारियों की रोकथाम के उपाय बताए। डॉ. जगदीप ने केसिंग मिश्रण को तैयार करने की व्यावहारिक जानकारी दी। डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने मशरूम में आने वाले मुख्य कीट, उनसे होने वाले नुकसान, लक्षणों व प्रबंधन के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी और साथ ही उन्होंने किसानों को खुम्ब गृह में सफाई रखने की विशेष सलाह दी। उन्होंने बताया कि इसकी साफ-सफाई का ध्यान रखने से इस प्रकार के कीड़े-मकोड़े का कम प्रकोप होता है। डॉ. निर्मल कुमार ने खुम्ब का आर्थिक विश्लेषण के माध्यम से खुम्ब को लाभकारी व्यवसाय के रूप में इसकी महत्ता का जिक्र किया। इस प्रशिक्षण में हरियाणा व पंजाब के 40 प्रतिभागियों ने ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण हासिल किया।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	24.02.2021	--	--

# कृषि अवशेषों को जलाने की बजाय खुम्ब उत्पादन के लिए प्रयोग : डॉ. संदीप भाकर

पाठकपक्ष न्यूज़

हिसार, 24 फरवरी : किसान फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खुम्ब उत्पादन के लिए प्रयोग में ला सकते हैं। इससे एक और जहां पर्यावरण प्रदूषित नहीं होगा वहां पर किसानों की आय में भी बढ़ाती होगी। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सहायक वैज्ञानिक डॉ. संदीप भाकर ने बताए प्रशिक्षण के सह-संयोजक कहे। वे विश्वविद्यालय के साथना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. अर. एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया गया। संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने प्रशिक्षणार्थियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक



संबोधित विभिन्न विषयों को अनेक वैज्ञानिकों द्वारा विस्तार से सांझा किया गया। प्रशिक्षण के सह-संयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि सफेद बटन खुम्ब, ढाँगरी खुम्ब व धान के पुआल की खुम्ब के लिए हरियाणा प्रदेश का मौसम अनुकूल है। उन्होंने बताया कि खुम्ब एक संतुलित आहार है जो पोषण व औषधीय गुणों से भरपूर है। खुम्ब में कैटोरी और वसा की मात्रा कम होने की वजह से यह न सिर्फ वजन के बढ़ने से रोकने और वजन घटाने में सहायक है बल्कि इसमें प्रोटीन, विटामिन सी, विटामिन बी, विटामिन डी, कॉर्ण, पोटाशियम, फास्फोरस, सलेनियम, फाइओकेमिकल्स और एंटी ऑक्सीडेन्ट्स जैसे पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं जो व्यक्ति को अवशेषों से खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी मदद करते हैं। इसके अलावा कई औषधीय गुण भी विटामिन होते हैं। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी. के. शर्मा ने मशरूम के मूल्य संबंधित उत्पाद तैयार करने की

विधि पर प्रकाश डाला। पौधे रोग विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राकेश चूध ने ढाँगरी खुम्ब तथा कीड़ी जड़ी खुम्ब को उगाने की विधि पर प्रकाश डाला। डॉ. मनमोहन ने खुम्ब में होने वाली मुख्य बिमारियों की रोकथाम के उपाय बताए। डॉ. जानदीप ने केसिंग मिश्रण को तैयार करने की व्यावहारिक जानकारी दी। डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने मशरूम में आने वाले मुख्य कीट, उनसे होने वाले नक्सान, लक्षणों व प्रबल्धन के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी और साथ ही उन्होंने किसानों को खुम्ब गृह में सफाई रखने की विशेष सलाह दी। उन्होंने बताया कि इसकी साफ-सफाई का ध्यान रखने से इस प्रकार के कीड़े-मकोड़ों का कम प्रकोप होता है। डॉ. निर्मल कुमार ने खुम्ब का आर्थिक विश्लेषण के माध्यम से खुम्ब को लाभकारी व्यवसाय के रूप में इसकी महत्ता का जिक्र किया। इस प्रशिक्षण में हरियाणा व पंजाब के 40 प्रतिभागियों ने ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण हासिल किया।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	24.02.2021	--	--

### फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खुब्ब उत्पादन के लिए प्रयोग में लाएं किसान : डॉ. भाकर

हिसार/24 फरवरी/एप्रेल-

किसान फसल अवशेषों को जलाने आयोजित ऑनलाइन प्रशिक्षण की बजाय खुब्ब उत्पादन के लिए प्रयोग में लाएं सकते हैं। इससे एक प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे और जहां पर्यावरण प्रदूषित नहीं थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार होगा वहीं किसानों की आग में भी शिक्षा निदेशक डॉ. अरएस हुड्डा बहुतीरी होगी। उक्त विचार चौधरी वर्षार्द्धन के मार्गदर्शन व देखरेख में किसान चरण सिंह हरियाणा कृषि गया। संस्थान के सह निदेशक विश्वविद्यालय के सहायक विज्ञानिक डॉ. संदीप भाकर ने बताया कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुब्ब उत्पादन विश्वविद्यालय के साथना नेहवाल का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं और अधिक लाभ अर्जित कर शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि खुब्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित ऑनलाइन प्रशिक्षण की बजाय खुब्ब उत्पादन करने की तरफाई की बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशहूर का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदानी बढ़ा सकते हैं। प्रशिक्षण के सह संयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि खुब्ब अवशेषों से खुब्ब कार्यालय, फार्मफॉरम, सेलेनियम, फाइओकॉमिल्स और एंटी ऑक्सीडेंट्स जैसे योग्य तत्व अपनी आमदानी बढ़ा सकते हैं। प्रशिक्षण के सह संयोजक डॉ. अलावा कई औषधीय गुण भी विद्यमान होते हैं। संस्थान के वरिष्ठ विज्ञानिक डॉ. डीकॉ शर्मा ने मशहूर के मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार करने की विषय पर प्रकाश डाला। निमिल कुमार ने खुब्ब को लाभकारी व्यवसाय बताते हुए इसकी महत्व का जिक्र किया।

कीड़ा जड़ी खुब्ब को उगाने की विधि पर प्रकाश डाला। डॉ. मनमोहन ने खुब्ब में होने वाली मुख्य विमर्शों की योग्यता के उपर बताए। डॉ. जगदीप ने केंद्रीय मिशन को तैयार करने की व्यावहारिक जानकारी दी। डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने मशहूर में आने वाले नुकसान, लक्षणों व प्रबंधन के बारे में किसानों को जानकारी दी। डॉ. निमिल कुमार ने खुब्ब को लाभकारी व्यवसाय बताते हुए इसकी महत्व का जिक्र किया।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज़	24.02.2021	--	--

# कृषि अवशेषों को जलाने की बजाय खुम्ब उत्पादन के लिए प्रयोग: डॉ. भाकर

## खुम्ब उत्पादन तकनीक पर ऑनलाइन कार्यशाला का समापन

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। किसान फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खुम्ब उत्पादन के लिए प्रयोग में ला सकते हैं। इससे एक ओर जहां पर्यावरण प्रदूषित नहीं होगा वहां किसानों की आय में भी बढ़ोतरी होगी। उक्त विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सहायक वैज्ञानिक डॉ. संदीप भाकर ने बतार प्रशिक्षण के सह-संयोजक कहे। वे सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने बताया कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। प्रशिक्षण के सह-संयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि सफेद बटन खुम्ब, ढींगरी खुम्ब व धान के पुआल की खुम्ब के लिए हरियाणा प्रदेश का मौसम अनुकूल है। उन्होंने बताया कि खुम्ब एक संतुलित आहार है जो पाषण व औषधीय गुणों से भरपूर है। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी. के. शर्मा ने मशरूम के मूल्य संबंधित उत्पाद तैयार करने की विधि पर प्रकाश डाला। पौध रोग विभाग के वैज्ञानिक डॉ. राकेश चुध ने ढींगरी खुम्ब तथा कीड़ा जड़ी खुम्ब को उगाने की विधि पर प्रकाश डाला। डॉ. मनमोहन ने खुम्ब में होने वाली मुख्य बिमारियों की रोकथाम के उपाय बताए। इस प्रशिक्षण में हरियाणा व पंजाब के 40 प्रतिभागियों ने ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण हासिल किया।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार न्यूज	24.02.2021	--	--

# कृषि अवशेष जलाने की बजाय खुंब उत्पादन के लिए प्रयोग करें : डॉ. संदीप भाकर

हिसार, 24 फरवरी (राजकुमार) : किसान फसल अवशेषों को जलाने की बजाय इन्हें खुंब उत्पादन के लिए प्रयोग में ला सकते हैं। इससे एक और जहां पर्यावरण प्रदूषित नहीं होगा वहां किसानों की आय में भी बढ़ोतारी होगी। यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सहयोग वैज्ञानिक डॉ. संदीप भाकर ने प्रशिक्षण के साथना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुंब उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहीं। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार विधा निदेशक डॉ. आरएस हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया गया। संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने प्रशिक्षणार्थियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान

किया। उन्होंने कह कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदानी बढ़ा सकते हैं। इस प्रशिक्षण में खुंब से संबोधित विभिन्न विषयों को अनेक

प्रक्रान्त डाला। डॉ. मनमोहन ने खुंब में होने वाली मुख्य बीमारियों की रोकथाम के उपाय बताएं। डॉ. जगदीप ने कैसिंग मिश्रण को तैयार करने की व्यावहारिक जानकारी दी। डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने मशरूम में आने वाले मुख्य कोट, उनसे होने वाले नुकसान, लकड़ों व प्रब्रह्मन के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी और साथ ही उन्होंने किसानों को खुंब गृह में सफाई रखने की विशेष सलाह दी। उन्होंने बताया कि इसकी साफ-सफाई का ध्यान रखने से इस प्रकार के कीड़े-मकोड़ों का कम प्रकोप होता है। डॉ. निर्मल कुमार ने खुंब का आर्थिक विश्लेषण के माध्यम से खुंब को लाभकारी व्यवसाय के रूप में इसकी महता का विक्र किया। इस प्रशिक्षण में हरियाणा व पंजाब के 40 प्रतिभागियों ने ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण हासिल किया।

**खुंब उत्पादन तकनीक पर**  
**ऑनलाइन कार्यशाला का समापन**

वैज्ञानिकों द्वारा विस्तार से साझा किया गया। प्रशिक्षण के सह-संयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि सफेद बटन खुंब, ढींगरी खुंब व धान के पुआल की खुंब के लिए हरियाणा का मौसम अनुकूल है। संस्थान के विष्ट वैज्ञानिक डॉ. डीके शर्मा ने मशरूम के मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार करने की विधि पर प्रकाश डाला। पौधे रोग विधान के वैज्ञानिक डॉ. राकेश चौधरी ने ढींगरी खुंब तथा कीड़ा जड़ी खुंब को उगाने की विधि पर



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

दैनिक भाष्टक

दिनांक २५.१.२०२१ पृष्ठ संख्या २ कॉलम २-६

# एचएयू का राष्ट्र स्तरीय कृषि मेला मार्च में होगा, पहली बार कृषि के क्षेत्र में दिए एचएयू के योगदान को जानेंगे किसान

विवि के अधिकारियों ने मेले की तैयारियां की शुरू, सितंबर में कोरोना के कारण वर्चुअल कृषि मेला हुआ था

भारकर न्यूज़ | हिसार

देशभर के किसानों के लिए एक खुशखबरी है। एचएयू प्रशासन ने मार्च में किसानों के लिए राष्ट्र स्तरीय कृषि मेला आयोजित कराने का निर्णय लिया। दो दिवसीय होने वाले मेले की तारीख जल्द ही घोषित कर दी जाएगी। विभागीय अधिकारियों ने कृषि मेले की सभी तैयारियां पूरी करनी शुरू कर दी हैं। कृषि मेला आयोजित कराने का जिम्मा एचएयू के विस्तार शिक्षा निदेशालय को सौंपा गया।

एचएयू साल में दो राष्ट्र स्तरीय कृषि मेले आयोजित करता है। जिसमें एक सितंबर माह जबकि दूसरा मार्च या फिर अप्रैल माह में आयोजित किया जाता है। कोरोना के कारण बीती 29 सितंबर को ऑफ लाइन कृषि मेला आयोजित नहीं किया जा सका था। सूत्रों के अनुसार मार्च माह में आयोजित होने वाले कृषि मेले को लेकर असर्वज्ञस की स्थिति थी। मगर हाल ही में विवि प्रशासन ने निर्णय लिया है कि ऑफलाइन ही मार्च माह में राष्ट्र स्तरीय कृषि मेला आयोजित किया जाएगा।

वर्चुअल मेले ने बनाया था रिकॉर्ड

29 सितंबर को एचएयू ने किसानों के लिए वर्चुअल कृषि मेला आयोजित किया था। जिसमें दो लाख से अधिक किसानों ने भाग लिया था। एचएयू के कृषि मेले ने पंजाब कृषि विवि के रिकार्ड को भी तोड़ दिया था। यहीं नहीं किसानों ने भी वर्चुअल कृषि मेले की खूब सराहना की थी।

### किसान गोष्ठियां भी होंगी आयोजित

कोरोना के कारण एचएयू में किसान गोष्ठियां भी नहीं हो पाए रही थीं। ऑनलाइन माध्यम से ही किसानों को फसलों के बारे में जानकारी दी जा रही थी। कुलपति का कहना है कि जल्द ही किसानों के लिए ऑफलाइन माध्यम से भी गोष्ठियां शुरू कर दी जाएंगी। किसानों से सुझाव भी मार्गे जायेंगे।

भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान करनाल के निदेशक का एचएयू दौरा

हिसार | कृषि वैज्ञानिक समय पर बिजाई की जाने वाली और अधिक उत्पादन देने वाली उत्तर किस्मों को विकसित करने पर अधिक शोध कार्य करें ताकि किसानों की आमदनी में इजाफा हो सके और वे खुशहाल हो सकें। उक्त विचार भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान करनाल के निदेशक डॉ. जीपी सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के गेहूं व जौ अनुभाग के अनुसंधान क्षेत्र का दौरा करने के उपरांत वैज्ञानिकों से रुबरु हो रहे थे। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने विश्वविद्यालय में चल रहे विभिन्न अनुसंधान कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एके छाबड़ा, प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. सतीश खोखर सहित गेहूं व जौ अनुभाग के वैज्ञानिक मौजूद रहे।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... दैनिक मस्तक

दिनांक २५.१.२०२१....पृष्ठ संख्या..... ५.....कॉलम..... ६.८.....

## प्याज-लहसुन की फसल में कीट प्रबंधन कर आमदनी बढ़ा सकते हैं किसान एचएयू के वैज्ञानिक किसानों को नियमित रूप से दे रहे सलाह

भारकर न्यूज | हिसार

लगातार मौसम में आ रहे बदलाव के कारण प्याज और लहसुन की फसल में कई तरह के रोग लगने की संभावना बनी रहती है। अगर किसान समय रहते इनका प्रबंधन नहीं करते हैं तो उन्हें नुकसान उठाना पड़ सकता है। समय परं प्रबंधन कर किसान आमदनी भी बढ़ा सकते हैं। एचएयू के वैज्ञानिक किसानों को प्याज लहसुन में लगने वाले रोगों से बचाव की जानकारी दे रहे हैं।

एचएयू के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह और डॉ. आरएस ढिल्लो बताते हैं कि मौसम की अनुकूलता के आधार पर प्याज व लहसुन की फसलों में झुलसा, मुदुरोमिल, फर्कुनी, बैंगनी झब्बे रोग और थिप्स कीट रोग लग जाते हैं, जिसके कारण फसल खराब हो जाती है। झुलसा रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियां एक तरफ पीली और दूसरी तरफ हरी रहती हैं। मुदुरोमिल रोग में पत्तियों की सतह पर बैंगनी रोपंदार बृद्धि

### ट्राइटेन या सेंडोविट के घोल का छिड़काव करें

हिसार के कृषि रक्षा अधिकारी डॉ. अनुराग सांगवान बताते हैं कि प्याज और लहसुन की पत्तियां चिकनी होती हैं। उन पर दवा चिपकती नहीं है। इसलिए चिपचिपा पदार्थ ट्राइटेन या सेंडोविट एक मिलीलीटर प्रति लीटर घोल में मिलाकर छिड़काव करें। दवाओं के छिड़काव के कम से कम 2 सप्ताह बाद ही प्याज एवं लहसुन की खाने में प्रयोग करना चाहिए। छिड़काव कर नहाने के बाद कपड़ों को भी अच्छी तरह साष्टुन से धो लेना चाहिए। एचएयू के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि लहसुन और प्याज की फसल में कीटों का प्रबंधन कर किसान होने वाले नुकसान से तो बच सकते हैं साथ ही आमदनी भी बढ़ा सकते हैं। विवि में ट्रेनिंग देकर भी किसानों को फसलों में लगने वाले रोगों के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

दिखाई पड़ती है, जो बाद में हरा रंग लिए पीली हो जाती हैं। दोनों रोगों की रोकथाम के लिए मैंकोजेब 75 डब्ल्यूपी 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए। बैंगनी झब्बा रोग से प्रभावित पत्तियों और तनों पर छोटे-छोटे गुलाबी रंग के धब्बे पड़ जाते हैं, जो बाद में भूरे रंग के होकर आंख के आकार के हो जाते हैं और इनका रंग बैंगनी हो जाता है। इसके प्रबंधन के

लिए डिफेनोकोनाजोल 2.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। थ्रिप्स कीट पीले रंग के होते हैं। इनके शिशु व प्रौढ़ दोनों ही पत्तियों का रस चुस्त है, जिसके कारण पत्तियों पर हल्के हरे रंग के लंबे-लंबे धब्बे दिखाई पड़ते हैं। जो बाद में सफेद रंग के हो जाते हैं। इसके प्रबंधन के लिए साइपरमेथ्रिन 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

दोनों दिनों का जागरूक

दिनांक २५.२.२०२१...पृष्ठ संख्या.....५.....कॉलम.....।-५.....

# मौसम का पारा चढ़ा तो सर्दी ने बांधा बिस्तर

**राजस्थान में एंटी साइक्लोनिक सिस्टम बनने से हवा में बार-बार हो रहा बदलाव, नारनौल में सबसे गर्म**

जागरण संगवादाता, हिसार : राजस्थान में एंटी साइक्लोनिक सिस्टम बनने से हवा में बार-बार बदलाव हो रहा है। इसके कारण अचानक गर्मी बढ़ गई है। नारनौल और हिसार में माघ के महीने में ज्येष्ठ के महीने जैसा आभास लोगों को अभी से होने लगा है। इतना ही नहीं रात का तापमान दिन के मुकाबले में काफी कम है।

नारनौल में बुधवार का अधिकतम तापमान 34.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया जो सामान्य से 10.8 डिग्री अधिक है। इतना ही नहीं हिसार में तापमान बढ़कर 32.4 डिग्री हो गया जो सामान्य से 11.3 डिग्री अधिक है। यहां बता दें कि मंगलवार को नारनौल में तापमान 33.8 डिग्री सेल्सियस और हिसार

में 32 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। इस तापमान ने अपने पिछले वर्ष का रिकॉर्ड 'तोड़ दिया था। बुधवार को मंगलवार से भी अधिक तापमान दोनों जिलों में दर्ज किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि मौसम विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा. मदन खिंचड़ ने बताया कि राज्य में मौसम आमतौर पर 27 फरवरी तक खुशक रहने, दिन के तापमान में हल्की बढ़ोतरी होने तथा उत्तर पश्चिमी हवा चलने से रात्रि तापमान में हल्की गिरावट होने की संभावना है। परंतु पश्चिमी विक्षेप विभाग के आंशिक प्रभाव के कारण 28 फरवरी से मौसम में बदलाव संभवित है।



हिसार : दो दिन से मौसम में हुए बदलाव और दिन में पड़ने लगी गर्मी में एवं प्र.यू. के चार नंबर गेट के सभी पूलों की व्यारी के पास से गुजरती युवतियां। ● गुलशन बाजार

तापमान बढ़ने के यह हैं तीन कारण

- गर्मी बढ़ने के तीन मुख्य कारण हैं इसमें पहला कारण है कि दक्षिणी पश्चिमी और पश्चिमी हवा चलने से तापमान बढ़ रहा है।
- दूसरा कारण है कि पश्चिमी विक्षेप मैदानी क्षेत्रों में न जाकर पहाड़ों की तरफ जा रहे हैं, उससे हवा में बार-बार बदलाव हो रहा है।
- तीसरा कारण है कि मध्य भारत में पुरावर्ष हवा अधिक चलने के कारण एंटी साइक्लोनिक सिस्टम राजस्थान के पास बना हुआ है। जिससे बार बार हवा में बदलाव हो रहा है।